विद्या भारती संकुल संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

जुलाई 2023 आषाढ़-श्रावण। विक्रमी सं. 2080

चंद्रयान-3 की लीड टीम का हिस्सा बने विद्या भारती के पूर्व छात्र

- अतुल निगोतिया
- अंकुर त्रिगुनायक
- वैभव उपाध्याय
- सोहन यादव

सहित अनेक छात्रों ने निभाई अहम भूमिका

शिक्षा के प्रति श्री अरविंद घोष का योगदान

NCERT ने जारी की कक्षा-1 और 2 की नई पुस्तकें

अब 'सारंगी' से हिंदी, 'मृदंग' से अंग्रेजी और 'शहनाई' से उर्दू पढ़ेंगे बच्चे

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी

NCERT

वैचारिक लेख

शिक्षा के प्रति श्री अरविंद घोष का योगदान

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा
गुरु साक्षात, परम ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः

भारतीय संस्कृति विरासत और परंपरा से समृद्ध है। इसमें उन महापुरुषों का आजीवन इतिहास है जो इस देश में पैदा हुए, चले और अपनी अंतिम सांस ली। श्री अरविंद घोष उनमें से एक हैं। श्री अरविंद अपने समय के सबसे प्रतिष्ठित और विद्वान गुरुओं में से एक थे; वह एक अध्यात्मवादी थे। वह भारत के सबसे सम्मानित और प्रसिद्ध रत्नों में से एक हैं।

श्री अरविंद का मानना है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है और लक्ष्य प्राप्ति के लिए शिक्षा एक बड़ा साधन है। उनका मानना था कि मनुष्य की सबसे अच्छी चीज़ उसकी आध्यात्मिकता है। वह एक बुद्धिजीवी थे जिन्होंने मानव और सामाजिक विकास का गहनता से विश्लेषण किया। श्री अरविंद के अनुसार, शिक्षा को मानव जीवन के संपूर्ण पहलुओं जैसे शारीरिक, मानसिक, मानसिक, सौंदर्य, शक्ति, ज्ञान और प्रेम आदि पर जोर देना चाहिए। समग्र शिक्षा मूल रूप से मनुष्य में इन पहलुओं की खेती है।

श्री अरविन्द भारत में शिक्षा के विषय में सदैव सोचते रहे। उन्होंने कैम्ब्रिज से काफी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और उन्होंने 1897 से 1906 तक बंगाल नेशनल कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में भीकार्यकिया।

समग्र शिक्षा के बारे में श्री अरविंद के विचार:

श्री अरविंद के अनुसार, शिक्षा को क्रमशः पदार्थ और आत्मा द्वारा दर्शाए गए शारीरिक, मानसिक और मानसिक पहलुओं के अलावा निम्नलिखित पहलुओं पर भी जोर देना चाहिए। इन पहलुओं (1) सौंदर्य, (2) शक्ति, (3) ज्ञान और (4) प्रेम की खेती को उन्होंने समग्र शिक्षा कहा है। भौतिक संस्कृति के माध्यम से सौन्दर्य की अनुभूति होती है। शक्ति का संबंध संवेदनाओं के नियंत्रण से होना चाहिए। ज्ञान एक सतर्क मस्तिष्क की मानसिक संरचना को विकसित करने में सहायताकरता है। प्रेम वांछनीय भावनाओं और संवेगों का निर्माण है, जिसे दूसरों की ओर और ईश्वर के साथ जुड़ाव की ओर निर्देशित किया जाना चाहिए।

श्री अरविंद कहते हैं, "यदि शिक्षा को बच्चे में जो कुछ भी है उसे पूर्ण लाभ पहुंचाना है, तो हमें सबसे पहले व्यक्तिगत रूप से जो कुछ भी है उसकी सुरक्षित अभिरक्षा की गारंटी देनी चाहिए। कुछ भी खोना या क्षतिग्रस्त, मुड़ना या कुचलना नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ दिव्य, कुछ अपना, पूर्णता और शक्ति का मौका होता है चाहे वह कितना ही छोटा क्षेत्र क्यों न हो जिसे ईश्वर उसे लेने या अस्वीकार करने के लिए प्रदान करता है। मनुष्य की दिव्यता का अपमान नहीं करना है, पूर्णता का वह अवसर खोना नहीं है और शक्ति की चिंगारी को बुझाना नहीं है। एक शिक्षक का कार्य बच्चे को दिव्यता के उस स्पर्श को अनुभव करने में सहायता करना है ताकि वह उसे विकसित करने के लिए 'कुछ' ढूंढ सके और उसका उपयोग कर सके। शिक्षा को उस बढ़ती हुई आत्मा को अपने अंदर उपस्थित सर्वश्रेष्ठ को बाहर निकालने और उसे एक नेक कार्य के लिए परिपूर्ण बनाने में सहायता करनी चाहिए।"

श्री अरविंद के शिक्षण के सिद्धांत:

कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता : सच्चे शिक्षण का पहला सिद्धांत यह है कि कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता। शिक्षक कोई प्रशिक्षक या टास्क मास्टर नहीं है, वह एक सहायक और मार्गदर्शक है।

मन के विकास में उससे परामर्श लेना होगा:

दूसरा सिद्धांत यह है कि मन के विकास में उससे परामर्श लेना होगा। माता-पिता या शिक्षक द्वारा बच्चे को मनचाहा आकार देने का विचार एक बर्बर और अज्ञानतापूर्ण अंधविश्वास है।

ज्ञात से अज्ञात की ओर कार्य करना: शिक्षण का तीसरा सिद्धांत निकट से दूर तक, ज्ञात से अज्ञात की ओर कार्य करना है। मनुष्य का स्वभाव उसकी आनुवंशिकता और उसके पर्यावरण से परे उसकी आत्माओं द्वारा ढाला जाता है। अतीत नींव है, वर्तमान भौतिक है और भविष्य लक्ष्य है - और प्रत्येक को शिक्षा की किसी भी राष्ट्रीय प्रणाली में अपना उचित और स्वाभाविक स्थान मिलना चाहिए।

एक शिक्षक की भूमिका:

श्री अरविंद के अनुसार, शिक्षकों का सम्मान किया जाना चाहिए और उनका कार्य बहुत ज़िम्मेदारी का है। शिक्षार्थी के विभिन्न कार्यों को ईमानदारी से देखना चाहिए ताकि वह मार्गदर्शन कर सके। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक को शिक्षार्थियों को उचित मार्ग दिखाना चाहिए और उसे प्राप्त करने के रास्ते बताने चाहिए और आत्म-मार्गदर्शन का पता लगाना चाहिए। और यह भी कहा कि कोई भी ज्ञान थोपें नहीं बल्कि वह उन्हें बताएं कि अलग-अलग कौशल कैसे प्राप्त करें।

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षक-शिष्य संबंध

श्री अरविंद अच्छे शिक्षण के कुछ ठोस सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं, जिन्हें वास्तव में सीखने की प्रक्रिया में शामिल होने पर ध्यान में रखा जाना चाहिए। श्री अरविंद के अनुसार, सच्चे शिक्षण का पहला सिद्धांत यह है कि "कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता।" वह बताते हैं कि बच्चे के अंदर ज्ञान पहले से ही सुप्त रहता है और इसी कारण से। शिक्षक कोई प्रशिक्षक या कार्य-मास्टर नहीं है; “वह सहायक और मार्गदर्शक है।” शिक्षक की भूमिका "सुझाव देना है न कि थोपना"। वह वास्तव में छात्र के मस्तिष्क को प्रशिक्षित नहीं करता है,

जारी ...

वह केवल उसे दिखाता है कि ज्ञान के उपकरणों को कैसे परिपूर्ण किया जाए और इस प्रक्रिया में उसकी सहायता करता है और उसे प्रोत्साहित करता है। वह उसे ज्ञान नहीं देता; वह उसे दिखाता है कि अपने लिए ज्ञान कैसे अर्जित किया जाए। वह उस ज्ञान को बाहर नहीं बुलाता जो भीतर है; वह उसे केवल यह दिखाता है कि यह कहां है और इसे सतह पर आने की आदत कैसे डाली जा सकती है।

ज्ञात से अज्ञात की ओर कार्य करना:

अगला सिद्धांत निकट से दूर, ज्ञात से अज्ञात की ओर कार्य करना है। एक बच्चे का स्वभाव उसकी आनुवंशिकता और उसके वातावरण से परे उसकी आत्माओं द्वारा पोषित होता है। अतीत के अनुभव नींव हैं, वर्तमान सामग्री है और भविष्य लक्ष्य है और प्रत्येक को शिक्षा की किसी भी राष्ट्रीय प्रणाली में इसे स्वाभाविक स्थान मिलना चाहिए।

महत्वपूर्ण प्रशिक्षण और शिक्षा

श्री अरविन्द ने सभी महत्वपूर्ण अंगों अर्थात ज्ञानेन्द्रियों को सक्षम बनाने पर बहुत अधिक महत्व दिया। ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलू है। इन इंद्रियों में त्वचा, कान, नाक और आंखें, तालु आदि बाहरी इंद्रियां और चित्त/मानस नामक आंतरिक इंद्रिय शामिल हैं। वहाँ विभिन्न भावनाओं, इच्छाओं, भावनाओं, आवेगों और भावनाओं की जड़ उपस्थित है - उसके अपने चरित्र के निर्धारण कारक। छात्रों की महत्वपूर्ण शिक्षा का महत्व दो गुना है - (1) यह विकसित होने में सहायता करता है, जैसा कि श्री माँ ने कहा, इंद्रिय-अंगों; (2) इसके माध्यम से, व्यक्ति धीरे-धीरे अपने चरित्र पर तज्ञता प्राप्त कर सकता है जो उसके परिवर्तन की ओर ले जाएगा। श्री माँ के अनुसार, इंद्रियों के उचित पोषण से बच्चों के भीतर उदारता और बड़प्पन पैदा करने में सहायता मिलेगी।

श्री अरविंद के अनुसार पाठ्यक्रम

श्री अरविंद ने बच्चे की सभी गुप्त क्षमताओं को अधिकतम रूप से विकसित करने के लिए स्वतंत्र वातावरण निर्धारित किया और सुझाव दिया कि उन सभी विषयों और गतिविधियों में रचनात्मकता और शैक्षिक अभिव्यक्ति के तत्व होने चाहिए। वे प्रत्येक विषय और गतिविधि में एक नये जीवन और भावना का संचार करना चाहते थे जिसके माध्यम से महामानव का विकास संभव हो सके। उन्होंने पाठ्यक्रम के लिए निम्नलिखित सिद्धांत निर्धारित किये। "पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो बच्चों को रुचिकर लगे। इसमें उन संपूर्ण विषयों को शामिल किया जाना चाहिए जो मानसिक और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देते हैं। इसे बच्चों को संपूर्ण विश्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसमें जीवन की रचनात्मकता और रचनात्मक क्षमताएं शामिल होनी चाहिए।"

अरविंद ने शिक्षा के विभिन्न चरणों के लिए पाठ्यक्रम का वर्णन किया है-

- **प्राथमिक स्तर पर -** संस्कृत, मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, साहित्य, राष्ट्रीय इतिहास, कला, चित्रकला, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और अंकगणित।

- **माध्यमिक स्तर पर -** संस्कृत, मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, साहित्य, अंकगणित, कला, रसायन विज्ञान, भौतिकी,

वनस्पति विज्ञान, शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य शिक्षा, सामाजिक अध्ययन।

- **विश्वविद्यालय स्तर पर -** भारतीय और पश्चिमी दर्शन, सभ्यता का इतिहास, अंग्रेजी साहित्य, फ्रेंच, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, रसायन विज्ञान, भौतिकी, वनस्पति विज्ञान।

- **व्यावसायिक स्तर पर -** कला, पेंटिंग, फोटोग्राफी, मूर्तिकला, ड्राइंग, प्रकार, कुटीर उद्योग, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, नर्सिंग आदि।

श्री अरविंद ने शिक्षा को मन की आत्मा, राष्ट्र के शरीर और व्यक्ति के वास्तविक कामकाज के लिए एक उपकरण के रूप में देखा।

उनके शैक्षिक दर्शन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी सीमा तक किसी विशेष योग्यता के रूप में आध्यात्मिक चेतना होती है जिसे शिक्षक को पहचानकर आगे बढ़ने देना चाहिए। उन्होंने मनुष्य को वर्तमान स्थिति से उज्ज्वल भविष्य तक ऊपर उठाने के लिए सभी को शामिल किया। उन्होंने ऐसी शिक्षा के बारे में सोचा जो एक व्यक्ति के लिए हो जो उसकी आत्मा, उसकी शक्तियों और संभावनाओं के विकास को एक केंद्रीय उद्देश्य बनाएगी।

पांडिचेरी में साधना के दौरान, वह मानव जाति के लिए अपने दृष्टिकोण को मजबूत करने में सक्रिय रूप से शामिल रहे। अंत में, उन्होंने श्री अरविंद इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एजुकेशन की स्थापना के साथ आश्रम में शिक्षा के क्षेत्र में अपने दर्शन का विस्तार किया। यह शिक्षा में उनके दर्शन के सिद्धांतों को लागू करने के लिए एक वास्तविक प्रयोगशाला के रूप में कार्य कर रहा है।

-आदित्य नारायण राव

(लेखक चेन्नई के विवेकानन्द विद्यालय गुम्मिडिपोंडी में गणित के शिक्षक हैं) (मूल अंग्रेज़ी से अनुवादित)

चंद्रयान-3 की लीड टीम का हिस्सा बने विद्या भारती के पूर्व छात्र

जालौन के अतुल निगोतिया, अंकुर त्रिगुनायक, भीलवाड़ा के वैभव उपाध्याय और रांची के सोहन यादव सहित अनेक छात्रों ने निभाई अहम भूमिका

जालौन/भीलवाड़ा/रांची।
चंद्रयान-3 के सफल परीक्षण में यूपी के जालौन के 2 वैज्ञानिक भी शामिल हैं जो सरस्वती शिशु मंदिर के पूर्व छात्र रहे हैं। सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य रामगोपाल त्रिपाठी ने बताया कि पूर्व छात्र अतुल निगोतिया और अंकुर त्रिगुनायक ने मिशन चंद्रयान-3 की लीड टीम का हिस्सा बनकर विद्यालय परिवार, जिले के साथ प्रदेश का मान बढ़ाया है। इसरो वैज्ञानिक अतुल निगोतिया ने 1995 में झांसी रोड स्थित सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज से हाईस्कूल उत्तीर्ण किया था। वैज्ञानिक अंकुर त्रिगुनायक ने वर्ष 1996 में सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज उरई से हाईस्कूल उत्तीर्ण किया था।

चन्द्रयान-3 की लॉन्चिग में राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा कस्बे के वैभव उपाध्याय ने भी अहम भूमिका निभाई है। वैभव ने प्रोजेक्ट मैनेजर और मल्टीमीटर डिजाइनिंग इन्चार्ज के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। वैभव ने आदर्श विद्या मंदिर शाहपुरा में प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की थी।

मिशन चंद्रयान-3 में रांची के वैज्ञानिक सोहन यादव भी शामिल हैं। उनके पिता ट्रक ड्राइवर हैं और मां गृहिणी हैं। उन्होंने सरस्वती शिशु मंदिर से पढ़ाई की है। वह रांची के तोरपा क्षेत्र के तपकरा गांव के रहने वाले हैं। इसरो में सोहन यादव आर्बिटर इंटिग्रेशन और टेस्टिंग टीम में शामिल हैं। सोहन यादव मिशन गगनयान से भी जुड़े हैं। सोहन यादव ने तपकरा स्थित शिशु मंदिर में प्राथमिक शिक्षा की है।

चंद्रयान-3 मिशन में रांची की है विशेष भूमिका
चंद्रयान-3 की लॉन्चिंग में रांची की विशेष भूमिका रही है। इसके लॉन्चिंग पैड की डिजाइन रांची स्थित मेकन संस्थान ने तैयार की है, जबकि 84 मीटर ऊंचे लॉन्चिंग पैड का निर्माण भी रांची के एचईसी में ही किया गया था।

व्यक्तित्व विकास शिविर में छात्रों ने सीखे तनाव प्रबंधन के तरीके

उत्तरकाशी। जनकल्याण शिक्षा समिति, दिल्ली ने उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के मनेरी में 28 मई से 4 जून तक विशेष रूप से कक्षा नौवीं से बारहवीं के छात्रों के लिए व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया। विधायक उत्तरकाशी श्री सुरेश सिंह चौहान, डीएम श्री अभिषेक रूहेला ने स्थानीय प्रशासन के बारे में जानकारी दी। स्वामी अक्षयानंद और डॉ. अनुज ब्रह्मचारी ने छात्रों को तनाव प्रबंधन के तरीके बताए और कहा कि हमारी संस्कृति का ज्ञान महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे सामूहिक जुड़ाव की भावना विकसित होती है। मुख्य विकास अधिकारी श्री गौरव कुमार ने विद्यार्थियों को शीर्ष व्यक्तित्वों के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने की सलाह दी। शिविर में योग, सीखने की कला, वाद-विवाद सह-समूह चर्चा, समाचार पत्र विश्लेषण, JAM, एक्सटेम्पोर और मॉडल यूनाइटेड नेशंस आदि का आयोजन किया गया।

सिविल सेवकों के साथ संवाद छात्रों में आत्मविश्वास और नेतृत्व विकसित करने में सहायक होगा। छात्रों ने गंगोत्री धाम के भी दर्शन किये। शिविर में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया। शिविर में 8 विद्यालयों के 65 छात्रों ने भाग लिया, जिनमें 13 छात्र गीता निकेतन आवासीय विद्यालय कुरूक्षेत्र से थे।

मेधावी छात्र अलंकरण समारोह

नित्य नया सीखने का प्रयास करें विद्यार्थीः श्रीराम आरावकर

सीधी (म प्र)। सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मड़रिया, सीधी में 6 जुलाई को मेधावी छात्र अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया। विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री श्रीराम अरावकर ने कहा कि विद्यालयों में विभिन्न परिषदें बनाई जाती हैं, जिससे बच्चों में कर्तव्य बोध हो सके। विद्यार्थी ही नहीं, सभी को नित्य नया सीखना चाहिए। "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है" के अनुसार हमें अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ध्यान देना चाहिए और हमेशा महापुरुषों की जीवनी का अध्ययन करना चाहिए। कक्षा में बताई गई बातों को ध्यानपूर्वक सुनें, समझ न आने पर दूसरे दिन गुरुओं से पुनः समझें और नियमित रूप से स्वाध्याय करें। डॉ. आनंद राव क्षेत्रीय सहसंगठन मंत्री ने कहा कि वह विद्यालय श्रेष्ठ कहा जाता है जिसके संपूर्ण विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हों।

बोर्ड परीक्षाओं के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

मध्य प्रदेश के टॉप टेन में सरस्वती विद्यालय मड़रिया के छात्र बीरेश प्रजापति को विद्यालय प्रबंध समिति की ओर से 5000 रुपये का नगद पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री अमित दवे प्रांतीय संगठन मंत्री विद्या भारती महाकौशल प्रांत, एवं विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर विद्या भारती के विद्यालयों में यज्ञ का आयोजन

पूर्व क्षेत्र आधारभूत विषय कार्यशाला का आयोजन

बालेश्वर। शिक्षा विकास समिति, बालेश्वर ओड़िशा पूर्वोत्तर सम्भाग परिसर में विद्या भारती पूर्व क्षेत्र की दो दिवसीय आधारभूत विषय कार्यशाला का आयोजन 11-12 जुलाई को किया गया। कार्यशाला में ओड़िशा, पश्चिम बंग, सिक्किम एवं अन्दमान प्रदेश से पांच आधारभूत विषयों शारीरिक, योग, संगीत, संस्कृत और नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के क्षेत्र स्तरीय विषय संयोजक एवं प्रमुख, प्रांत स्तरीय विषय संयोजक एवं प्रमुख शामिल रहे। विद्या भारती पूर्व क्षेत्र के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकान्त महारणा, पूर्व क्षेत्र के संगठन मन्त्री श्री दिवाकर घोष जी, शिक्षा विकास समिति, ओड़िशा के संगठन मन्त्री श्री तारकदास सरकार और क्रीड़ा भारती के उत्कल प्रांत संपादक एवं विद्या भारती खेल परिषद के उपाध्यक्ष श्री रघुनाथ साहू आदि ने मार्गदर्शन किया। पूर्व क्षेत्र योग शिक्षा संयोजक श्री मधुसूदन बारिक, पूर्व क्षेत्र प्रशिक्षण संयोजक श्री नरेन्द्र कुमार राउल, पूर्वोत्तर सम्भाग अध्यक्ष श्री अमूल्य प्रसाद नायक, संपादक श्री मुक्तेश्वर सेठी एवं संयोजक श्री विभूतिभूषण पट्टनायक आदि का विशेष सहयोग रहा।

शिशु वाटिका प्रशिक्षण वर्ग

गांधीधाम, गुजरात | उत्तर पूर्व क्षेत्र के द्वितीय चरण के अखिल भारतीय शिशु वाटिका प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन 19 से 26 जुलाई तक 'समर्थ' भारत केंद्र भवन, गांधीधाम, गुजरात में किया गया। वर्ग का उद्घाटन क्षेत्रीय संगठन मंत्री उत्तर पूर्व क्षेत्र श्री ख्याली राम ने किया। प्रशिक्षण वर्ग में झारखंड प्रांत से 20 शिशु वाटिका की दीदी शामिल हुईं। भरत भाई जी, आशा बहन थानकी, जयस भाई आदि के साथ ही उत्तर-पूर्व क्षेत्र की शिशु वाटिका प्रमुख श्रीमती मंजू श्रीवास्तव एवं शिशु वाटिका संरक्षक पूर्णकालिक तुलसी प्रसाद ठाकुर विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

प्रांतीय वंदना सह गीत आचार्य प्रशिक्षण वर्ग

झारखंड | प्रांतीय वंदना सह गीत आचार्य प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन 12 से 16 जुलाई तक आचार्य प्रशिक्षण विद्यालय कृष्ण चंद्र गांधी शैक्षिक नगर, कुदलुम के परिसर में विद्या विकास समिति झारखंड द्वारा आयोजित किया गया। प्रशिक्षण वर्ग में वन्दना अभ्यास एवं विद्यालयों में गाए जाने वाले मासिक गीत का अभ्यास कराया गया। इसके अलावा दिसंबर माह में प्रस्तावित कला संगम पर भी चर्चा हुई। वर्ग में 110 विद्यालयों से 115 संख्या रही।

प्रचार विभाग महाकौशल प्रान्त की बैठक

जबलपुर। प्रचार विभाग महाकौशल प्रान्त की बैठक में कोग्निक सिस्टम सॉफ्टवेयर कंपनी के संस्थापक ज्ञानेंद्र सिंह ने प्रचार विभाग के कार्यों की बारीकी से जानकारी दी। इसके साथ हीं प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी कई महत्वपूर्ण टूल्स से प्रायोगिक रूप से भी अवगत कराया। संघ के प्रचार प्रमुख श्री विनोदने बताया कि प्रचार विभाग के कार्यों को कैसे गति प्रदान करनी है। इसके साथ ही कार्य योजना, वार्षिक कैलेंडर, क्लोज्ड ग्रुप आदि की उपयोगिता बताई। बैठक में विद्या भारती मध्य क्षेत्र के सह संगठन मंत्री डॉ आनंद राव, प्रान्त संगठन मंत्री श्री अमित दवे, सरस्वती शिक्षा के सचिव डॉ नरेन्द्र कोष्टी जी, कोषाध्यक्ष श्री विष्णुकांत ठाकुर व सभी पूर्णकालिक उपस्थित रहे।

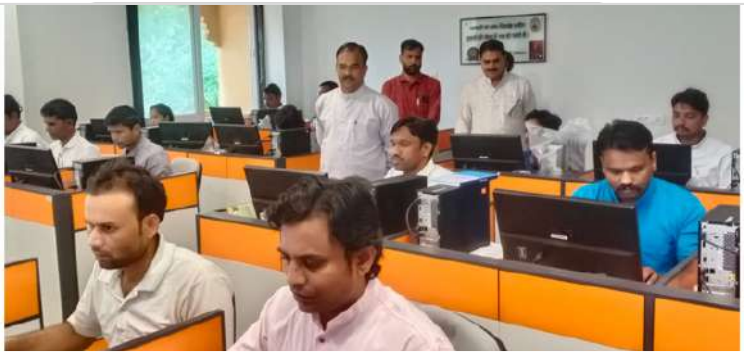

प्रान्तीय ICT प्रशिक्षण कार्यशाला

मालवा। सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान में प्रान्तीय ICT प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों के कार्यों का अवलोकन करते विद्या भारती मालवा के संगठन मंत्री श्री अखिलेश मिश्र। साथ में उपस्थित हैं श्री सुन्दरलाल शर्मा सह-प्रान्त प्रमुख सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा।

खासी हिल्स जनजाति के विद्यालयों का ओरिएंटेशन कैंप

मेघालय | खासी हिल्स जनजाति के तीन विद्यालयों का 3 दिवसीय ओरिएंटेशन कैंप का आयोजन किया गया। ओरएंटेशन कैंप में 30 शिक्षकों और संसाधक पीआरएफ श्री सौमेन चक्रवर्ती, श्री रिनोमोह सुंगोह, श्री समीर सरकार, प्रो. सुभाष चंद्र रॉय और श्री कमल कुमार ने प्रतिभाग किया। कैंप में डॉ. पवन जी, विवेकानन्द जी, अणिमा सरमा जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

(खासी हिल्स: यह भारत के मेघालय राज्य में शिलांग पठार में स्थित है। खासी पहाड़ियां गारो-खासी-जयंतिया रेंज का हिस्सा हैं और पूर्वांचल रेंज और आगे पूर्व में बड़ी पटकाई रेंज से जुड़ती हैं। सबसे ऊंची चोटी लुम शिलांग है जो 1968 मीटर ऊंची है।)

जनजाति शिक्षा समिति की शैक्षणिक सभा का आयोजन

नागालैंड | नागालैंड के माननीय राज्यपाल श्री ला गणेशन की उपस्थिति में एनईपी-2020 की सफलता के लिए शिक्षकों की भूमिका विषय पर 5वीं शैक्षणिक सभा।

माननीय राज्यपाल
श्री ला गणेशन

श्री लज्जाराम स्मृति व्याख्यानमाला, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
राष्ट्र की आवश्यकता, विचार और जीवन पद्धति पर आधारित है भारत केन्द्रित शिक्षा

भारतीय शिक्षा के भविष्यदृष्टा थे श्री लज्जाराम तोमरः अवनीश भटनागर

कुरुक्षेत्र । विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान एवं इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटेड एंड ऑनर्स स्टडीज, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 25 जुलाई को श्री लज्जाराम तोमर स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में किया गया।

''भारत केन्द्रित शिक्षा के मनीषी: श्री लज्जाराम तोमर'' विषय पर संबोधन में विद्या भारती के महामंत्री श्री अवनीश भटनागर ने कहा कि भारत केंद्रित शिक्षा पर डॉ. लज्जाराम तोमर के व्याख्यान 1980 के दशक में हमने सुने हैं। आज जिसको देश स्वीकार कर रहा है उसके बारे में 30-40 वर्ष पहले चिंतन करना, उसकी रूपरेखा प्रस्तुत करना, यह किसी विचारक, किसी चिंतक या किसी भविष्यदृष्टा का ही कार्य हो सकता है। उन्होंने कहा कि ज्ञान सार्वभौमिक होता है, परंतु शिक्षा सदैव राष्ट्रीय होती है। राष्ट्र की आवश्यकता, विचार, जीवन-पद्धति, इस पर आधारित शिक्षा व्यवस्था उस देश की आवश्यकता होती है। भारत की संस्कृति, भारत के विचार के आधार पर जब हम बात करते हैं तो वह भारत केंद्रित शिक्षा होती है। अवनीश जी ने कहा कि भारत के मनीषियों ने शिक्षा के सामने तीन उद्देश्य रखे हैं, विश्व का कल्याण, देश की प्रगति और व्यक्तित्व का विकास। व्यक्तित्व विकास माने स्मार्ट सीखना या अच्छे कपड़े पहनना या फर्राटे से अंग्रेजी बोलना नहीं अपितु व्यक्तित्व का विकास अपने से आगे बढ़कर सोचने वाला। व्यक्तित्व के विकास की इस पहली सीढ़ी के आधार पर देश की प्रगति की दूसरी सीढ़ी और जब सब देशों की प्रगति होगी तो स्वाभाविक रूप से आगे चलकर विश्व का कल्याण होगा। उन्होंने डॉ. राधाकृष्णन के तीन विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि प्राचीन ज्ञान का नवीन पीढ़ी को हस्तांतरण करना, नवीन ज्ञान का सृजन और जीवन में पग-पग पर आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करना। आज शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को, माता-पिता को, शिक्षक को स्पष्ट है क्या? दूसरा है शिक्षा का दर्शन अर्थात देश के विचार करने का ढंग और शिक्षा का विचार करने का ढंग यदि अलग-अलग होंगे तो एक दूसरे के विपरीत चलेंगे। इसलिए इससे कैसे बचा जाए? मनुष्य निर्माण की शिक्षा और चरित्र निर्माण की शिक्षा आज हम दे पा रहे हैं क्या? भारतीय शिक्षा का दर्शन मूलतः अध्यात्म केंद्रित है। उन्होंने योग की अवधारणा के पंचकोशों को भी विस्तार से बताया।

भारत में सीखने-सिखाने की पद्धति

श्री अवनीश भटनागर ने सीखने की प्रक्रिया के 8 पदों का उल्लेख करते हुए कहा कि **पहला-** प्रवचन, **दूसरा-** प्राश्निकता अर्थात प्रश्न पूछकर सीखना, **तीसरा-** स्व-अवलोकन से सीखना, **चौथा-** प्रयोग करके सीखना, **पांचवां-** परिशीलन अर्थात् अन्य स्रोतों से जानकारी करना, **छठा-** अन्य स्थानों पर जाकर परिशीलन के बाद परिष्कार करना, **सातवां -** परिष्कार के आधार पर अपने प्रयत्न से उसको सिद्ध करना और **आठवां -** जो सीखा उसे दूसरों को सिखाना। यह भारत में सीखने-सिखाने की पद्धति है।

लज्जाराम तोमर जी की प्रमुख पुस्तकें

लज्जाराम तोमर जी ने लगभग 40 वर्ष पूर्व विद्यालयों में अनेक नवाचार प्रयोग किए और भारतीय चिन्तन के आधार पर कई पुस्तकें लिखीं। इनमें 'भारतीय शिक्षा के मूल तत्व', 'प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति', 'विद्या भारती चिन्तन की दिशा', 'नैतिक शिक्षा', विद्या भारती की अभिनव पंचपदी शिक्षण पद्धति', 'शैक्षिक चिन्तन', 'भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान के आधार', 'परिवारों में संस्कारक्षम वातावरण क्यों और कैसे?', 'बोध कथाएँ' आदि शामिल हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में एनआईटी के निदेशक प्रो. बी.वी.रमण्णा रेड्डी ने कहा कि प्रत्येक विषय के अध्यापन के समय भारतीय ज्ञान को विषय के साथ कैसे पढ़ाया जाए, इस पर एनआईटी में विशेष बल दिया गया है। देश की प्रगति के लिए छात्रों के व्यक्तित्व विकास के साथ आध्यात्मिक विकास भी अत्यंत आवश्यक है। इन्हें अपनाकर अध्यापकों को पहल करनी होगी और छात्रों के समक्ष रोल मॉडल बनना होगा, तभी आने वाली पीढ़ी भारतीय ज्ञान प्रणाली को आत्मसात कर पाएगी। विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के निदेशक डॉ. रामेन्द्र सिंह ने कहा कि इस प्रकार की शैक्षिक विचार गोष्ठियों का आयोजन लज्जाराम तोमर जी की ही कल्पना थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में जिन पहलुओं को आधार बनाया गया है, वह कल्पना तोमर जी के मन-मस्तिष्क में लगभग 30 वर्ष पूर्व थी। इसका प्रमाण उनके द्वारा लिखित पुस्तकों में मिलता है।

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी, आई.आई.एच.एस. की प्राचार्य प्रो. रीटा एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. रामचन्द्र व श्री देसराज शर्मा, श्री यतीन्द्र शर्मा, श्री ब्रह्माजी राव, श्री शिवकुमार, श्री सुरेंद्र अत्री, श्री वासुदेव प्रजापति, श्री अवधेश पाण्डे, श्री बालकिशन, श्री विजय नड्डा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से डॉ. हुकम सिंह, डॉ. जितेन्द्र, नारायण सिंह, श्री अनिल कुलश्रेष्ठ, कई विद्यालयों के प्राचार्य, अध्यापक आदि उपस्थित रहे।

NCERT ने जारी की कक्षा-1 और 2 की नई पुस्तकें

अब 'सारंगी' से हिंदी, 'मृदंग' से अंग्रेजी और 'शहनाई' से उर्दू पढ़ेंगे बच्चे

देश में अब 'सारंगी' से हिंदी, 'मृदंग' से अंग्रेजी और 'शहनाई' से उर्दू पढ़ेंगे बच्चे

नई दिल्ली। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत कक्षा-1 व 2 की नई पुस्तकें जारी की हैं जिनमें बच्चे सारंगी से हिंदी, मृदंग से अंग्रेजी और शहनाई से उर्दू पढ़ सकेंगे। गणित की पुस्तकों का नाम हिंदी में आनंदमय गणित और अंग्रेजी में जॉयफुल मैथमेटिक्स रखा गया है। इन पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद हो रहा है और इनके डिजिटल वर्जन भी जल्दी ही एनसीईआरटी की वेबसाइट पर उपलब्ध होंगे।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने NCERT की 58वीं काउंसिल बैठक में नई पुस्तकों का लोकार्पण किया। NCERT के निदेशक डीपी सकलानी ने बताया कि कक्षा-एक और दो की पुस्तकें जारी होने के साथ ही NEP के तहत फाउंडेशन लेवल की पांच कक्षाओं की पाठ्य-सामग्री जारी करने काकार्यपूरा हो गया है। बाल वाटिका यानी नर्सरी, केजी-1 व 2 तक की तीन कक्षाओं के लिए खेल-खिलौने आधारित पाठ्य-सामग्री जादुई पिटारा फरवरी में ही जारी हो गई थी। इसमें 53 तरह के खेल-खिलौने, पोस्टर, प्लेकार्ड आदि हैं।

कक्षा-3 से 12 तक की पाठ्यचर्या का प्रारूप तैयार हो गया है, जो कुछ सप्ताहों में सार्वजनिक हो जाएगा। इसके बाद हर विषय की पुस्तक के लिए विषयवस्तु तय करने के लिए समितियों का गठन होगा। उम्मीद है कि 2024-25 सत्र शुरू होने से पहले अधिकांश पुस्तकें तैयार कर ली जाएंगी।

अभी तक कक्षा-1 व 2 के लिए एनसीईआरटी की हिंदी भाषा की पुस्तक का नाम रिमझिम, अंग्रेजी भाषा की पुस्तक का नाम मैरीगोल्ड व रेनड्रॉप और अंकगणित की पुस्तक का नाम गणित का जादू है।

कक्षा-1 की रिमझिम में 23 अध्याय थे, लेकिन अब कक्षा-1 की सारंगी में 19 अध्याय हैं, जिन्हें पांच भागों परिवार, जीव-जगत, हमारा खानपान, त्योहार व मेले और हरी-भरी दुनिया में बांटा गया है। इसमें चंदा मामा दूर के, मुर्गा बोला कुकडू कूं, वाह मेरे घोड़े की चाल जैसी लोकप्रिय कविताओं को शामिल किया गया है।

पहले कक्षा-2 की हिंदी की पुस्तक रिमझिम में 15 अध्याय थे, लेकिन नई पुस्तक सारंगी में 26 अध्याय हैं।

कारगिल विजय दिवस

जम्मू-कश्मीर। कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष में जम्मू प्रांत के विद्यालयों में कारगिल युद्ध में शहीद हुए वीर सपूतों को श्रद्धांजलि दी गई। विद्यार्थियों ने शहीदों के स्मारक पर जाकर उनके अनगिनत कार्यों को याद किया एवं भारत माता की जय के जयघोष लगाए।

पूर्व छात्र स्नेह मिलन कार्यक्रम

शारदा बाल निकेतन माध्यमिक विद्यालय, डेगाना। जिला - नागौर, जोधपुर प्रांत (राजस्थान)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार पुस्तक लेखन करने वाले लेखकों का सम्मान

कुरुक्षेत्र | विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा लज्जाराम तोमर भवन कुरुक्षेत्र में पाठ्य-पुस्तक लेखक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। विद्या भारती ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार लगभग 80 पुस्तकों का पुनर्लेखन किया है।

समारोह में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पुस्तकों के लेखन कार्य में सहयोग के लिए पुस्तक लेखकों को सम्मानित किया गया। समारोह में दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख प्रांत के 40 लेखकों ने सहभाग किया। इस अवसर पर विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र अत्री, संगठन मंत्री श्री विजय नड्डा एवं महामंत्री श्री देशराज शर्मा उपस्थित रहे।

निर्माणाधीन कौशल विकास एवं प्रशिक्षण केंद्र का निरीक्षण

जबलपुर | गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया की ओर से सरस्वती शिक्षा परिषद, नरसिंह मंदिर, जबलपुर में 1.5 करोड़ रुपये की लागत से कौशल विकास एवं प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण किया जा रहा है। इससे शीघ्र ही जबलपुर को सर्व सुविधायुक्त केंद्र उपलब्ध हो सकेगा। गैस अथारिटी आफ इंडिया लिमिटेड नई दिल्ली के डायरेक्टर श्री आर.के. जैन, सीए श्री अखिलेश जैन, श्री संजय कुमार एवं डॉ. रविकांत कोल्हे ने सीएसआर मद से निर्मित हो रहे कौशल विकास एवं प्रशिक्षण केन्द्र की प्रगति का निरीक्षण किया। डायरेक्टर श्री आर.के. जैन ने कहा कि विद्या भारती परिसर में निर्मित होने वाले इस कौशल विकास एवं प्रशिक्षण केन्द्र से अनेक प्रतिभाएं समाज को प्राप्त होंगी। विद्या भारती मध्य क्षेत्र के सह संगठन मंत्री डॉ. आनंद राव ने विद्या भारती की विकास यात्रा एवं शिशु मंदिर योजना के स्थापना के उद्देश्यों से अवगत कराया। निर्माणाधीन यह केन्द्र टेबल टेनिस, बैडमिंटन, कुश्ती के साथ रंग-मंचीय विधा, भाषण कौशल, योग कौशल आदि के लिए आवश्यक सुविधाओं से युक्त होगा। कार्यक्रम में डॉ. नरेन्द्र कोष्टी, श्री विष्णु कान्त ठाकुर, डॉ. सुधीर अग्रवाल, श्री ईश्वरदास पटेल, श्री अमित दवे, श्रीमती रेखा चुडासमा, श्री सियाराम गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

गेल इंडिया ने डेढ़ करोड़ से शुरू किया कौशल विकास एवं प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण कार्य

जबलपुर। समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा प्राप्त हो इस दिशा में विद्या भारती संस्थान अपनी जिम्मेदारी का बखूबी निर्वाह कर रहा है, विद्या भारती परिसर में निर्मित होने वाले इस कौशल विकास एवं प्रशिक्षण केन्द्र से अनेक प्रतिभायें समाज जीवन को प्राप्त होंगी। उक्त उद्गार गेल इंडिया लिमिटेड नई दिल्ली के डायरेक्टर सी.ए. अखिलेश जैन, आर.के. जैन, संजय कुमार एवं डॉ. रविकांत कोल्हे ने सीएसआर मद से निर्मित होने वाले कौशल विकास एवं प्रशिक्षण केन्द्र के प्रगति का

निरीक्षण करते हुए व्यक्त किए। विद्या भारती परिवार की ओर से मध्य क्षेत्र के सह संगठन मंत्री डॉ. आनंद राव ने विद्या भारती की विकास यात्रा एवं शिशु मंदिर योजना के स्थापना के उद्देश्यों से अवगत कराया। गेल इंडिया के सहयोग से निर्माणाधीन कौशल विकास एवं प्रशिक्षण केन्द्र के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला। प्रादेशिक सचिव डॉ. नरेन्द्र कोष्टी, प्रांत कोषाध्यक्ष विष्णु कान्त ठाकुर, साहित्य प्रसार समिति के अध्यक्ष डॉ. सुधीर अग्रवाल, ग्रामीण शिक्षा के कोषाध्यक्ष ईश्वरदास पटेल ने गेल इंडिया के अधिकारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर प्रांत संगठन मंत्री अमित दवे, बालिका शिक्षा प्रमुख सुश्री रेखा चुड़ासमा, प्रांत प्रमुख सियाराम गुप्ता, सह प्रांत प्रमुख शिवानंद सिनहा एवं प्रांत के समस्त पूर्णकालिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। संचालन विभाग समन्वयक राघवेन्द्र शुक्ल ने एवं आभार ज्ञापन डॉ. नरेन्द्र कोष्टी ने किया।

विद्या भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष माननीय डी. रामकृष्ण राव जी ने पूर्वोत्तर संवाद (ई पत्रिका) का विमोचन किया।

शिशु शिक्षा समिति असम द्वारा आयोजित आचार्य प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

असम | विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध शिशु शिक्षा समिति असम द्वारा 15 दिवसीय आचार्य प्रशिक्षण वर्गों का आयोजन किया गया। असम में संचालित शंकरदेव शिशु विद्या निकेतनों के आचार्यों हेतु होजाई एवं सिबसागर में 5 से 20 जुलाई तथा नारेंगी एवं अभयापुरी में 10 से 25 जुलाई तक आचार्य प्रशिक्षण वर्गों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण वर्गों में 414 आचार्य एवं आचार्याओं ने भाग लिया।

वालीबाल (Volleyball) टूर्नामेंट स्थानीय युवा का आयोजन

सिक्किम | साप्ताहिक Volleyball टूर्नामेंट स्थानीय युवा के आयोजन सरस्वती विद्या निकेतन, मालबासे-नामंफिग, दक्षिण सिक्किम खेल मैदान मे 5 जुलाई 2023 से प्रारम्भ हुआ। मुख्य अतिथि सिक्किम सरकार श्री बेदु सिंह पंथ (टेमी-नेम्फिंग क्षेत्र विधायक सह मंत्री वाणिज्य एवं उद्योग, पर्यटन, नागरिक उड्डयन विभाग) के माननीय मंत्री ने उद्घाटन किया।
इस अवसर पर विद्यालय के वन्दना कक्ष में माननीय मंत्री महोदय से विद्या भारती सिक्किम के पदाधिकारी वर्ग के साथ विद्यालय के बारे मे चर्चा हुई।

विद्या धाम में संपन्न हुई विद्या भारती पंजाब की साधरण सभा

विद्या दान है सर्वोत्तम दान – श्री शिव कुमार, अखिल भारतीय मंत्री, विद्या भारती

पंजाब | विद्या धाम जालंधर में विद्या भारती पंजाब की साधारण सभा संपन्न हुई। इस साधारण सभा में विद्या भारती पंजाब के अध्यक्ष मेजर जनरल सुरेश खजूरिया जी ने RASE – 23 व साधारण सभा की पुस्तिका का विमोचन किया।

साधारण सभा पुस्तिका का विमोचन करते हुए (बाएं से दाएं) डा. नवदीप शेखर, श्री विजय नड्डा, श्री शिवकुमार, मेजर जनरल श्री सुरेश खजूरिया और श्री जयदेव बातिश

विद्याभारती मध्यक्षेत्र की योजनानुसार क्षेत्रीय साधारण सभा

महाकौशल | विद्याभारती मध्यक्षेत्र की योजनानुसार क्षेत्रीय साधारण सभा दिनांक 08 जुलाई 2023 की प्रातः 10:00 बजे से 09 जुलाई 2023 तक सरस्वती शिशु मंदिर उ.मा.वि. कृष्णनगर सतना (महाकौशल प्रान्त) में आयोजन किया गया।

कार्यालय प्रमुख कार्यशाला, पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र, नोएडा

नोएडा | दिनांक 16 जुलाई 2023 को विद्यालय में चल रहे तीन दिवसीय कार्यालय प्रमुखों की क्षेत्रीय कार्यालय प्रमुख कार्यशाला में श्री डोमेश्वर साहू (क्षेत्रीय संगठन मंत्री) श्री सुरेन्द्र अत्री (उपाध्यक्ष, उत्तर क्षेत्र, विद्या भारती), श्री छोटेलाल साहू, श्री क्षितिज साहू एवं श्रीमान सोरेन सिंह (क्षेत्रीय कार्यालय सचिव) की गरिमामयी उपस्थिति रही। श्री डोमेश्वर साहू ने विद्या भारती के लक्ष्य और उसकी प्राप्ति में कार्यालय प्रमुखों का योगदान विषय पर सभी का मार्गदर्शन किया। श्री सुरेन्द्र अत्री ने कार्यालय के विभिन्न कार्यों के लिए मानक नियमावली एवं फाईनैंस मैनेजमेंट पर सभी का मार्गदर्शन किया।

मेधावी छात्रों का हुआ सम्मान

जयपुर। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की 10वीं एवं 12वीं परीक्षा में विद्या भारती के विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अच्छे अंक लाकर कीर्तिमान स्थापित किया है। इन मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित करने के लिए विद्या आश्रम स्कूल में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में 97 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में मेधावी विद्यार्थियों के अभिभावकों और गुरुजनों को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अलवर के सांसद श्री महंत बालक नाथ योगी और श्री गोबिंद चंद महंत अखिल भारतीय संगठन मंत्री विद्या भारती विशेष रूप से उपस्थित रहे। अध्यक्षता डॉ. प्रदीप शेखावत सूचना आयुक्त (हरियाणा सरकार) ने की।

विद्या भारती के गौरवपूर्ण क्षण

तेलंगाना | श्री सरस्वती विद्या पीठम (विद्या भारती तेलंगाना) के पूर्व आचार्य और प्रसिद्ध पत्रकार श्री रविकांति श्रीनिवास गारू, भोपाल में स्थापित प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के शासी निकाय के सदस्य के रूप में नियुक्त।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह शासी निकाय के अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं।

बाल वैज्ञानिक श्लोक त्रिपाठी का सम्मान

प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) | प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज सिविल लाइन्स के विद्यार्थी और बाल वैज्ञानिक श्लोक त्रिपाठी को प्रधानाचार्य श्री विक्रम बहादुर सिंह ने सम्मानित किया।

इस अवसर पर श्लोक त्रिपाठी ने कहा कि मैने जब कक्षा अष्टम में प्रवेश लिया तभी से विज्ञान के नये-2 प्रयोगों के बारे में गुरुजनों से जानकारी प्राप्त करने लगा था। मैने विद्यालय द्वारा आयोजित संकुल स्तरीय ज्ञान-विज्ञान मेला प्रतियोगिता में सेंसर पर आधारित मॉडल बनाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। बाद में DRDO द्वारा लखनऊ में आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया और तत्पश्चात् NASA द्वारा बनारस में आयोजित Human Research Operation प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इसके बाद दिल्ली में आयोजित नेशनल लेवल प्रश्न-मंच प्रतियोगिता में प्रथम स्थान और अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। भारत सरकार की ओर से आयोजित प्रतियोगिताओं में भी मैने प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसके बाद मैने "आर्मी डिफेंस शूज नामक प्रोजेक्ट पर कार्य किया।

इसके माध्यम से सेना का सिपाही 50 सेमी पहले ही जान सकता है कि आगे लैण्डमाइन है या नहीं। इससे हमारी सेना को सर्जिकल स्ट्राइक जैसे आपरेशन करने में सहायता मिलेगी। वर्तमान में थल सेना, नेवी और वायुसेना व मर्चेंट नेवी में प्रोजेक्ट विचाराधीन है और इनमें सेवा के लिए मुझे 10 प्रतिशत की छूट मिली हुई है। कार्यक्रम में विद्यालय के मीडिया प्रभारी सरोज दुबे और आचार्य आदि उपस्थित रहे।

ओडिशा लोक सेवा आयोग (OPSC - Odisha Public Service Commission) मे चयनित सभी सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर की प्रतिभाओं को बधाई।

ओडिशा लोक सेवा आयोग (OPSC - Odisha Public Service Commission) मे चयनित सभी सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर की प्रतिभाओं को बधाई।

विद्या भारती के गौरवपूर्ण क्षण

पूर्व छात्र निषाद कुमार ने " पैरा एथलेटिक्स वर्ल्ड चैंपियनशिप 2" में रजत पदक जीता

हिमाचल | हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा संचालित सरस्वती विद्या मन्दिर कटौहड़ खुर्द जिला ऊना के पूर्व छात्र निषाद कुमार ने फ्रांस के पेरिस में आयोजित "पैरा एथलेटिक्स वर्ल्ड चैंपियनशिप 2023" Men's High Jump में **रजत पदक** जीतकर भारत का नाम रोशन किया है।

साइकिल पर अद्वितीय भारत यात्रा

मध्य प्रदेश | विद्या भारती मध्य प्रदेश के पूर्व छात्र व आचार्य मेहुल ने भारत में "साइकिल क्रांति" लाने के लिए 25 महीनों में 18 राज्यों की साइकिल से 42,000 किलोमीटर की पूरी की अद्वितीय भारत यात्रा।

श्री राजेन्द्र प्रसाद खेतान अखिल भारतीय उपाध्यक्ष एवं श्री शिवकुमार अखिल भारतीय मंत्री का विद्या भारती फाउंडेशन ऑफ अमेरिका प्रवास (13 जून से 29 जून 2023)
विद्या भारती की विकास यात्रा, उपलब्धियां, कार्यपद्धति, व्यापकता, भारत एवं अमेरिका में शिक्षा व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन आदि विषयों पर आदान-प्रदान

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन

जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली - 110065

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net |
www.vidyabharatisamvad.com

vbabss@yahoo.com | vbsamvad@gmail.com

91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में ,